Vol 6 Issue 10 July 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

# Review Of Research Journal

Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## Regional Editor

Dr. T. Manichander

## *Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

# मध्यकालीन भक्ति के दो पक्षः सगुण और निर्गुण

*डॉ. मनोज आर. पटेल*
*आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज*
*नडियाद , गुजरात.*

*प्रस्तावना :*

भारतीय दर्शन ब्रह्मा के स्वरूप का विवेचना मुख्यतया दो रूपों में हुआ है–निर्गुण और सगुण। इन्हीं दों रूपों को आधार पर हिन्दी में भक्ति की दो धाराओं की उत्पत्ति हुई। इन्हीं दोनों धाराओं में अनुभूति, विचार और अभिव्यक्ति की समानता अधिक है, वैषम्य बहुत कम। वास्तव में मध्यकालीन भक्त कवि की मानसिकता एक दार्शनिक से बिल्कुल अलग है भक्तगण कवि होने के नाते विश्लेषण पर उतना बल नहीं देते जितना समग्रता बोध पर। वे ईश्वर और दृष्टि को अखंडित एवं विराट रूप में अपनी रचनाओं में अंकित करना चाहते हैं। इसलिए सगुण तथा निर्गुण को एक–दूसरे को विरोधी मान कर नहीं चलना चाहिए।

निर्गुण भक्ति में ब्रह्मा का साक्षात्कार विशुद्ध अनुभूतिपरक है, वह मुख्यतः आत्मा और परमात्मा अभेदत्व की स्थित है। इसमें त्रिगुणों (सत, रज, तम) से अछूते ब्रह्मा का नाम स्मरण, अर्चना, वन्दना तथा सेवन करते हुए प्रेम की मस्ती में डूबकर विश्व की एकात्मिक भावना में तल्लीन होकर जीवमृत जीवन्मृत होने की साधना है। अनिर्वचनीय, अमल, अकल एवं शाश्वत ईश्वर को भक्ति का आलम्बन बनाने की प्रक्रिया में तेजपुंज, क्रान्तिमान, दयावान, कर्ता, धर्ता, संहारक आदि गुणों से विभूषित कर दिया गया है। अभिव्यक्ति की प्रबल अकांक्षा जो कवि की आन्तरिक आकुलता भी है, के परिमाणस्वरूप उसे वचनीय भी बना दिया गया है। वचनीय बनाने की प्रक्रिया में निर्गुण भक्त अपनी भूल वैचारिकता की सीमा का अनजाने में उल्लंघन कर देते हैं। उनमें अवतारवाद की मान्यताओं का सहज सनिवेश हो जाता है तथा अनेक पौराणिक सन्दर्भों की चर्चा भी हो जाती है। निर्गुण भक्ति का बहुआयामी स्वरूप अपने अन्दर अद्वैत दर्शन योगदर्शन तथा नवधा भक्ति के अनेक तत्वों को समाहित कर लेता है। निर्गुण भक्ति यद्यपि ज्ञान, कर्म और ध्यान की उच्चतम स्थिति से अपने को सम्बन्ध करने की चेष्टा करते हैं किन्तु लोक अवस्थाओं, एवं लोक भावनाओं की वे अपेक्षा नहीं कर पाते हैं इसलिए भक्ति में ब्रह्म के साकार अवतार व्यक्त किया परन्तु निर्गुण में इससे व्याख्या नहीं करते हैं सैद्धान्तिक रूप से जिन तथ्यों का वे निषेध करते हैं व्यवाहारिक स्तर पर उसी को स्वीकार कर लेते हैं। सगुण ब्रह्म की परिधि में उनका प्रवेश बार–बार इसलिए हो जाता है। सगुण भक्ति में ब्रह्म के साकार अवतारी रूप को आलम्बन बनाया गया है। किन्तु इसमें निर्गुण का निषेध नही होता है इसलिए निर्गुण तथा सगुण भक्ति भावना को परस्पर विरोधी नही मानना चाहिए सगुण तथा निर्गुण दोनों में ईश्वर के गुणों का समान उल्लेख मिलता है। सगुणो उपासक तुलसी की पंक्तियों से इसी तथ्य का बोध होता है।

''दुष्ट–बिबुारि–संघात–अपहरन महिभार, अवतार कासअनुपं।
अमल अनवध अद्वैत निर्गुण सगुण ब्रह्म सुमिरनि नरभूप–रूपं''।

निर्गुण की तरह सगुण भी अद्भुत एवं अज्ञेय है, अविगत निर्गुण जब सगुण बनकर गतिशील होता है तो उसका ज्ञान और भी जटिल हो जाता है। सूरदास विविध लीला पदों में उसके इसी अपूर्ण रूप को समझाने की कोशिश करते हैं। तुलसी का कथन है कि उसे वही भक्त जान पाता है जिसे वह स्वयं जता देता है। उसकी लीला को जनसाधारण का कृत्य समझ लेने के भ्रम से बचने के लिए वे बार–बार उसके विशुद्ध निर्गुण रूप की ओर ध्यानाकर्षित करते हैं। निर्गुण और सगुण दोनों भक्तों ने ईश्वर की बाद्य विधि–विधानों तथा आडम्बरों से रहित मानसी भक्ति साधना पर बल दिया है। कबीर आदि निर्गुण सन्तों की सारी साधना ही आत्मिक है। देह के अन्दर घटित होने वाली है। तुलसी भी राम की छ्दय भवन में विशद भाव नैवेद्य से आरती करते हैं–

भाव अतिसय विसद प्रवर नैवेद्य श्री रमन परम सन्तोषकारी
विमल–छदि भवन कृति संगति–पर्यक सुभ सयन विश्राम श्रीराम रामा।

निर्गुण भक्ति के रहसयवादी वर्णन में जहाँ आत्मा–परमात्मा प्रेयसी और प्रिय के प्रतीकों का रूप ग्रहण कर लेते हैं। वहाँ शृंगार रस

की व्यापक लोक भूमिका बन जाती है। यहाँ आराध्य का एकम मात्र स्वामी रूप ही नहीं बल्कि पति एवं जननी का रूप भी कल्पित कर लिया गया है सूफी साधना में तो इस प्रतीक का इतना अधिक विस्तार है कि रहस्य भावना गौड़ हो गयी है। लोक भावना प्रधान। सूफियों में आत्मा–परमात्मा के प्रेम विरह की साधना किसी लौकिक ऐतिहासिक कथा का आश्रय ग्रहण कर भक्ति के लीला वर्णनों एवं चरिताख्यानों की तरह ही, लौकिक रस आप्लावित हो गयी है। चाक्षुष तथा स्थूल प्रतीकों के माध्यम से निर्गुण भक्ति ब्रह्म मिलन के परमानन्द को प्राप्त करना चाहता है। ये प्रतीक साधना के सहज माध्यम का कार्य करते हैं। संसार की विषय वासनाएं मन को आकर्षित करके ईश्वर भक्ति से विरत करती है। निर्गुण सगुण दोनों भक्ति पद्धतियों में मन की सांसारिक गति को अवरूद्ध करके ईश्वरोन्मुख करने का यत्न परिलक्षित होता है। इस जटिल कार्य के लिए ईश्वर की कृपा की भी याचना की गयी है। संसार के जाल में बार–बार फसने उलझने की पीड़ा का अहसास दोनों प्रकार के भक्तों को है। यही पीड़ा ही अनेक पदों में दैत्य के रूप में प्रस्फुटित होती है।

गुरू की महिमा दोनों में स्वीकृत है। गुरू की कृपा के बिना साधक अज्ञान के अंधकार से मुक्त नहीं होता। ज्ञान चक्षु को उखाड़ने की क्षमता भी गुरू में ही होती है। गुरू की कृपा बिना साधक अज्ञान के अंधकार से मुक्त नहीं हो सकता। निर्गुण भक्ति में यदि गुरू गोविन्द से बढ़कर है तो सगुण भक्ति में वह नररूप हरि है तुलसी ने राम से राम, के नाम को अधिक श्रेष्ठ माना है क्योंकि नाम की सूक्ष्म भावात्मक अवधारणा में समस्त सांस्कृतिक, धार्मिक चेतना समाहित है तथा मन्त्र की तरह सहज स्मरणीय एवं जप योग्य है। कबीर भी नाम स्मरण को अजाप–जाप के स्तर तक ले जाते हैं। दोनों भक्ति रूपों में प्राप्त अन्तर आराध्य के स्वरूप का ही अन्तर है। आराध्य के अगोचर, अरूप एवं सर्वशक्तिमान सत्ता की समान स्वीकृति के कारण सन्त और सूफी भाव–साधना को निर्गुण भक्ति के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है।

निर्गुण भक्तिकाव्य–संतकाव्य :–संतकाव्य धारा के दार्शनिक सांस्कृतिक आधार अनेक है। जिनमें से प्रमुखरूपेण उल्लेखनीय है : उपनिषद् शंकराचार्य का अद्वैतदर्शन, नाथपंथ इस्लाम धर्म तथा सूफी दर्शन। संतों के चिंतन जीवन दर्शन और काव्य धारा पर उपनिषदों का व्यापक प्रभाव है। उपनिषदों में प्रतिपादित ब्रह्म, जीव, जगत, और माया सम्बन्धी विचारधारा के साथ ही ब्रह्म के स्वरूप–वर्णन से सम्बद्ध उपमानो और अप्रस्तुत योजनाओं को संतकवियों द्वारा प्रायः उसी रूप से ग्रहण कर लिया गया है। उपनिषदों का अनंतर संतकाव्यधारा और संतदर्शन का मुख्य आधार है। शंकर का अद्वैत दर्शन। संतों की विवर्त भावना, प्रतिबिम्ब–भावना, प्रणव भावना, साधनापक्ष और भक्ति पद्धति पर आचार्य शंकर की विचारधारा का व्यापक प्रभाव है। आचार्य शंकर और निर्गुण संत कवि, दोनों इस विषय में एकमत है कि जीवन विशुद्ध ब्रहम तत्व है और जो भिन्नता की उपलब्धि होती है, वह माया अथवा अविधा जनित उपाधि है। संतो ने आत्मा की सर्वरूपता, सर्वात्मभावना, एवं सर्वशक्तिमत्ता प्रतिपादित की है। ये भावनाएँ भी शंकर के सिद्धान्त के अनुकूल है। संत परम्परा में आत्मा की अखंडता, एकरसता, अद्वैतरूपता एवं अकथनीय का प्रतिपदान भी शंकर सिद्धान्त के अनुरूप है। संतकाव्य और संत दर्शन पर नाथपंथ का भी प्रचुर प्रभाव है। नाथपंथी कवियों एवं विचाराकों के शून्यवाद, उनके द्वारा गुरू की प्रतिष्ठा और सृष्टिक्रम आत्मा, जीव आदि के विषय में उनकी मान्यताओं से संत कवि अनेकशः प्रभावित रहे। संतसाधना में योगप्रक्रिया की जो प्रधानता है उसका मूल स्त्रोत नाथपंथी साधना पद्धति ही है। यद्यपि कबीरदास ने स्पष्टतया कहा है! ''तंत्र न जानू, मंत्र न जानू, जानूं सुन्दर काया'' तथापि कबीर के अन्तर उनकी परम्परा में अवतरित और विकसित संप्रदायों में तंत्र साधना का स्वरूप प्रमुख रहा। मलूक पंथ और निरंजनी संप्रदाय में इस प्रभाव को सहज ही लक्षित किया जा सकता है। इस्लाम के सम्पर्क और प्रभाव के कारण संतो की विचार धारा एकेश्वरवाद से प्रभावित हुई। इस्लाम की देन निषेधात्मक अधिक रही, विधेयात्मक कम। मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद के बहिष्कार का मूलाधार इस्लाम धर्म में ही है! इस्लाम ने सामाजिक का मूलाधार इस्लाम धर्म में ही है! इस्लाम ने सामाजिक असमानता को दूर करने की भी चेष्टा की। सत्य यह है कि एकेश्वरवाद उस समय की सबसे बड़ी आवश्कता थी। अतः कबीर प्रभृति संत कवियों ने हिंदू–मुसलामान दोनों को एकेश्वरवाद का संदेश सुनाया। जिसके परिणामस्वरूप जनता को बहुदेवोंपासना के अभिशाप से छुटकारा मिला। इस सन्दर्भ में दार्शनिक व सांस्कृतिक धरातल पर सूफी मत से प्राप्त प्रेरणा भी उल्लेखनीय है! संतकाव्य में दांम्पत्य प्रतिको की उपलब्धि सूफीदर्शन के प्रभाव का ही परिणाम है। सूफीमत ने संतो की विचारधारा को ही नहीं, अभिव्यजनाशैली को भी प्रभावित किया! अधिकतर विद्वान संन्त मत के प्रवर्तन का श्रेय कबीर को देते है किन्तु कबीर से पूर्व विट्ठल सम्प्रदाय में सनत सम्प्रदाय की प्रायः समस्त विशेषताओं का सूत्रपात हो गया था! इस सम्प्रदाय के कवियों में सोमेश्वर, चक्रधर महाराज, नामदेव, जयदेव, ज्ञानेश्वर, मुक्ताबाई उल्लेखनीय है। इनका रचनाकाल प्रायः आदिकाल की सीमा में पड़ता है।

निर्गुण संतों की विचारधारा के बीच सिद्ध व नाथ कवियों की रचनाओं में तो मिलते ही है। आदिकाल में नामदेव ने भी इस दिशा में योग दिया था। भक्तिकालीन निगुर्ण भक्ति कवियों में कबीर दादू नानक रैदास आदि ने निर्गुण भक्ति काव्य की रचना की है। भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के अंतर्गत आराध्य देवताओं में श्रीकृष्ण का स्थान सर्वोपरि है। वेदों में श्रीकृष्ण का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में कृष्ण (आंगिरस) का उल्लेख है। पुराणों तक आते–आते राम और कृष्ण अवतार रूप में प्रतिष्ठत हो गये। श्रीमद्भागवत पुराण में उन्हें पूर्ण ब्रह्म के रूप में चित्रित किया गया है। भक्तिकाल में कृष्णभक्ति का प्रचार कृष्ण की जन्म एवं लीला भूमि में व्यापक रूप में हुआ। वैष्णव भक्ति सम्प्रदायों में वल्लभाचार्य,–पुष्टिमार्ग निम्बकाचार्य –निम्बार्क, श्री हितहरिवंश राधावल्लभ स्वामी हरिदास–हरिदासी, चैतन्य महाप्रभु–गौड़ीय संप्रदाय सभी सम्प्रदायों में पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण तथा श्री राधा उनकी आछलादिनी शक्ति की उपासना की गयी। सत् चित आनंद स्वरूप श्री कृष्ण नन्द और यशोदा के आँगन में विभिन्न बाल–लीलाओं के माध्यम से समस्त गोकुल वासियों को आनंद प्रदान करते है।

हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति पर आधारित काव्यों की लम्बी परम्परा है (आदिकालीन कृष्ण काव्य में चंदवरदाई और विद्यापति उल्लेखनीय है।) भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवियों पर महाप्रभु वल्लभाचार्य का विशेष प्रभाव है। उन्होने श्री कृष्ण के बाल एवं किशोर रूप की लीलाओं का गायन किया तथा गोवर्धन पर श्रीनाथ जी को प्रतिष्ठित कर एक मन्दिर बनवाया उन्होंने भगवान के अनुग्रह की महत्त पर बल दिया।

दर्शन के क्षेत्र में विष्णुस्वामी के शुद्धाताद्वैत का प्रभाव इन पर दिखाई देता है। अपने इस भक्ति मार्ग को उन्होंने पुष्टिमार्ग कहा और अनेक शिष्यों को कृष्ण भक्ति का मन्त्र देकर दीक्षित भी किया। जिन्हें अष्टछाप के कवि अथवा अष्ट सखा कहा गया। इनमें सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास चार श्री वल्लभाचार्य के शिष्य और गोविन्दस्वामी, नन्ददास छीतस्वामी और चतुर्भुजदास–चार वल्लभाचार्य के पुत्र श्री विट्ठलनाथ के शिष्य थे। आठ की संख्या होने से इन्हें अष्टछाप कहा गया। इन सभी भक्त कवियों ने श्रीमदभागवत

के आधार पर ही कृष्ण लीला गान किया है। इसके लिए अपने आराध्य श्रीकृष्ण की कृपा से प्राप्त भगवत प्रेम ही महत्वपूर्ण है। पुष्टिमार्ग का अनुयायी भक्त आत्मसमर्पण युक्त रसात्मक प्रेम द्वारा भगवान की लीला में तल्लीन हो आनन्दावस्था को प्राप्त होता है।

सभी कृष्ण भक्त कवियों कीरचनाएँ भक्ति संगीत और कवित्व का समन्वित रूप है। लीलामय श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति के आवेश में इन अष्टछाप कवियों के हृदय से गीतिकाव्य की जो निर्झरिणी प्रस्फुटित हुई उसने भगवदभक्तों को आकंठ निमग्न कर दिया।

*डॉ. मनोज आर. पटेल*
*आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज नडियाद , गुजरात.*

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com